मुनिसुव्रतनाथ भगवान आराधना

रचयिता

अर्हं योग प्रणेता

पूज्य मुनि श्री 108 प्रणम्य सागर जी महाराज

आर्हत विद्या समिति, गोटेगाँव

कृति	:	मुनिसुव्रतनाथ भगवान आराधना
आशीर्वाद:		संत शिरोमणी आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज
रचयिता	:	मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज
पुण्यार्जक	:	नवीन, नीना, पराग, शिल्पा शुभम, खनक, तिशा, सनय नमोकार प्रोपर्टीज, मानसरोवर, जयपुर
संस्करण	:	प्रथम, जुलाई 2024
प्रतियाँ	:	1000
मूल्य	:	50/-(पुनः प्रकाशन हेतु)
आई.एस.बी.एन	:	978-81-976900-9-9
प्रकाशक	:	आर्हत विद्या समिति, गोटेगांव
प्राप्ति स्थान	:	आर्हत विद्या समिति गोटेगांव, नरसिंहपुर (म. प्र.) मो. 9425837476- नवीन जैन आचार्य अकलंक देव जैनविद्या शोधालय समिति 109, शिवाजी पार्क, देवास रोड, उज्जैन (म. प्र.) दूरभाष : 2519071
मुद्रक	:	अरिहंत ग्राफिक्स, दिल्ली 9958819046

परम पूज्य सन्त शिरोमणि
आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज

अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज

पूर्व नाम	:	ब्र. सर्वेश जी
पिता-माता	:	श्री वीरेन्द्रकुमार जी जैन, श्रीमती सरितादेवी जैन
जन्म	:	13.09.1975, भाद्रपद शुक्ल अष्टमी
जन्म स्थान	:	भोगाँव, जिला-मैनपुरी (उ.प्र.)
शिक्षा	:	बी. एस. सी. (अंग्रेजी माध्यम)
भाई	:	सचिन जैन
बहिन	:	सपना जैन
गृहत्याग	:	09.08.1994
क्षुल्लक दीक्षा	:	09.08.1997, नेमावर
ऐलक दीक्षा	:	05.01.1998, नेमावर
मुनि दीक्षा	:	11.02.1998, माघसुदी 15, बुधवार, मुक्तागिरिजी
दीक्षा गुरु	:	संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज

अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज द्वारा साहित्य सृजन

संस्कृत भाषा में टीका ग्रन्थ

1. लिङ्गपाहुड़ (नन्दिनी टीका)
2. शील पाहुड़ (नन्दिनी टीका)
3. समाधि तन्त्र (आर्हतभाष्य)
4. चैतन्य चन्द्रोदय (चन्द्रिका टीका)
5. बारसाणुवेक्खा (कादम्बिनी टीका)
6. आत्मानुशासन (स्वस्ति टीका)
7. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय (मंगला टीका)
8. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका ('नीति-पथ')
9. तत्त्वार्थ सूत्र (तत्त्व संदीपिनी टीका, संस्कृत-प्राकृत)
10. संस्कृत एवं प्राकृत भक्ति (आठ भक्तियों की टीका)

हिन्दी में अनुवादित ग्रन्थ

1. सत्सकर्म पंजिका
2. दश भक्ति टीका
3. प्रवचनसार (सरोज भास्कर टीका)
4. कथा कोश
5. सत्य शासन परीक्षा
6. युक्त्यनुशासन
7. नाममाला (भाष्य)
8. सत्संख्यादि अनुयोगद्वार
9. पात्रकेसरी स्तोत्र
10. अष्टाष्टक स्तोत्र
11. संन्यास एषोस्तु किमात्मघातः
12. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति (आ. माघनन्दि)
13. नियमसार
14. समयसार
15. परीक्षामुख
16. प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी

पद्यानुवाद

1. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय
2. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका
3. तत्त्वार्थ सूत्र
4. पात्र केसरी स्तोत्र
5. कल्याणमन्दिर स्तोत्र
6. श्री वर्धमान स्तोत्र
7. मंगलाष्टक
8. माघनन्दी कृत अभिषेक पाठ
9. उपयोग शतक

प्रवचन ग्रंथ

1. बारसाणुवेक्खा
2. नई छहढाला प्रवचन
3. परमात्म योग (समाधि तन्त्र)
4. जीव विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय - 2)
5. मनोविज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-6)
6. लोक विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-3, 4)
7. व्रत विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-7)
8. अध्यात्म योग (इष्टोपदेश)
9. प्रवचनसार का सार (गाथा 1-26)
10. प्रवचनसार का सार(गाथा 27-60)
11. प्रवचनसार का सार (गाथा 61-101)
12. प्रवचनसार का सार (गाथा 102-136)
13. प्रवचनसार का सार (गाथा 137-175)
14. कर्म बंध विज्ञान
15. धर्म का मर्म (अपने को समझें)
16. राम कथा
17. पञ्च लब्धि
18. स्त्री को मोक्ष क्यों नहीं
19. मेरी भावना को अपनी भावना बनाएँ
20. तत्त्व विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-१)
21. जीव विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-२)
22. सिद्ध भक्ति
23. नीतिवाक्यामृत Part 1 - आदर्श जीवन की नीतियां

अर्हं योग प्रणेता मुनि श्री प्रणम्यसागर जी महाराज द्वारा साहित्य सृजन

संस्कृत भाषा में मौलिक काव्य ग्रन्थ

1. स्तुति पथ
2. श्रायस पथ
3. सिद्धोदयाष्टकम्
4. श्री वर्धमान स्तोत्र
5. अनासक्त महायोगी (आचार्य श्री का जीवनवृत)
6. उपयोग शतकम्
7. अर्हं अष्टाङ्ग योग शतकम्
8. आ. श्री शान्तिसागर स्तुति शतकम्
9. श्री शान्तिनाथ स्तोत्र (शतकम्)
10. महामह नन्दीश्वर विधान
11. गोवैभवशतकम् (आयुर्वेद सम्बन्धी)
12. चतुर्विंशति-जिनस्त्रोत्रम् (पूजा एवं विधान)
13. मुनिसुव्रत भगवान आराधना

प्राकृत भाषा में मौलिक ग्रन्थ

1. तित्थयर भावणा (सोलहकारण भावनाओं पर प्राकृत गाथाएँ)
2. दार्शनिक प्रतिक्रमण
3. अष्टपाहुड़ (प्राकृत टीका 16)
4. धम्मपह
5. प्राकृत रचना भास्कर
6. प्राकृत शिक्षा भाग 1-2-3-4
7. गोम्मटेस पडिमा भत्ति

अन्य मौलिक कृतियाँ

1. युगद्रष्टा (भगवान ऋषभदेव पर उपन्यास)
2. जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य
3. खोजो मत पाओ (लाइफ मैनेजमेंट)
4. आलेख पथ (20 सैद्धान्तिक आलेख)
5. समयसार का ज्ञानी आत्मा कौन?
6. अन्तर्गूञ्ज (भजन एवं हायकू)
7. लहर पर लहर (कविता संग्रह)
8. बेटा! (शिक्षाप्रद सूक्तियाँ)
9. नई छहढाला
10. लक्ष्य (जीवंधर चरित्र)
11. मुनिसुव्रतनाथ विधान
12. अर्हं दोहावली
13. अर्हं ध्यान योग
14. जिंदगी क्या है? (प्रवचन ग्रन्थ)

संकलन

1. संवाद (आचार्य श्री और बाबा रामदेव की चर्चा)
2. A Talk (संवाद का अंग्रेजी अनुवाद)
3. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन

अंग्रेजी भाषा में

1. Fact of Fate (Article)
2. Twelve Contemplation
3. I Love You My Soul

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ क्रमांक
मुनिसुव्रतनाथ भगवान पूजा	8
पंचकल्याणक स्तुति	10
विधान	18
प्रथम वलय	18
द्वितीय वलय	20
तृतीया वलय	23
आचार्य जिनसेनविरचित श्रीमुनिसुव्रतजिन-स्तोत्रम् (मुनि श्री प्रणम्यसागर महाराज द्वारा वन्दमाला मंत्र आराधना)	29

मुनिसुव्रतनाथ पूजा

(पूजा एवं विधान)

मुनिसुव्रत भगवान के, गुण अनन्त उर धार।
आह्वानन थापन करूँ, घटे कर्म मल भार॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननं।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठःस्थापनम्।

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरण।

जिह्वा इन्द्रिय वशीभूत हो, शीतल मधुर सुपान किया,
तृष्णा दाह बढ़ाई तन की, नहीं आत्म गुण गान किया।
जन्म जरा मृति नाशक हेतु, प्रासुक जल भरकर लाया,
स्वीकारो भक्ति प्रभु मेरी, तव चरणों में हूँ आया॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चन्दन खसखस शीतल मिश्रण, ले कर्पूर मिलाया है,
मन की दाह मिटे प्रभु मेरी, मन में भाव ये आया है।
भव संताप विनाशन हेतू, चन्दन चरणन अब लाया,
स्वीकारो भक्ति प्रभु मेरी, तव चरणों में हूँ आया॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय संसार-ताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

पुनः उगे ना धान्य भूमि में, ऐसा गुण तन्डुल में है,
छिलका हटता हरे लालिमा, शुद्ध धवल गुण उसमें है।

शुद्ध धवल मम आतम होवे, चरणन द्वय अक्षत लाया,
स्वीकारो भक्ति प्रभु मेरी, तव चरणों में हूँ आया॥

ॐ ह्वी श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अक्षय-पद-प्राप्तये अक्षातान् निर्वपामीति स्वाहा।

वेद भाव के उदय समय में , काम कषाय बढ़े मन में,
तब चरणन की पूजन से ही, चित्त विकार घटे मन में।
मेरा मन तव सम हो निर्मल, चरणन पुष्प अत: लाया,
स्वीकारो भक्ति प्रभु मेरी, तव चरणों में हूँ आया॥

ॐ ह्वी श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय काम-बाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तरह-तरह के इष्ट मिष्ट सब, व्यंजन मैंने खाये हैं,
भक्ष्य अभक्ष्य विचार रहा ना, तन की क्षुधा बढ़ाये हैं।
क्षुधा असाता मिटे वेदना, चरणन चारु चरु लाया,
स्वीकारो भक्ति प्रभु मेरी, तव चरणों में हूँ आया॥

ॐ ह्वीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय क्षुधा-रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महा अज्ञान बढ़ा है, ज्ञान हमारा भ्रम में है,
रत्न ज्योति सी निर्मल ज्योति, मेरे आतम घन में है।
मोह तिमिर वारो प्रभु मेरा, चरणन दीपक मैं लाया,
स्वीकारो भक्ति प्रभु मेरी, तव चरणों में हूँ आया॥

ॐ ह्वी श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय महा-मोहान्धकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

चहुँदिश में जो महा सुगन्धित, धूप यहाँ पर फैली है।
वह भी मन को मोहित करती, रही चेतना मैली है,

अष्ट कर्म की धूप उड़े अब, धूप चढ़ाने मैं लाया,
स्वीकारो भक्ति प्रभु मेरी, तव चरणों में हूँ आया॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

लौंग सुपारी बादामें औ, पिस्ता गोला मेवाएँ,
काम नहीं आई कुछ मेरे, सब पुद्गल की भ्रमणाएँ।
मोक्ष महा शाश्वत फल पाऊँ, चरणन फल को मैं लाया,
स्वीकारो भक्ति प्रभु मेरी, तव चरणों में हूँ आया॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फल निर्वपामीति स्वाहा।

जल चन्दन अक्षत पुष्पों को, ले नैवेद्य दीप संग में,
धूप तथा फल सभी मिलाके, अर्घ बनाकर के कर में।
पद अनर्घ पाने को प्रभुवर, अर्घ चढ़ाने हूँ लाया,
स्वीकारो भक्ति प्रभु मेरी, तव चरणों में हूँ आया॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घ्य-पद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक स्तुति

मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
पनकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥

शीतलनाथ जिनेश्वर आगे नौ तीर्थंकर और हुए,
तभी बीसवें जिन तीर्थंकर घर सुमित्र अवतार लिए।
इन्द्राज्ञा से रत्नवृष्टि कर फिर कुबेर वर्षा करता,
सोलह स्वप्न तभी पद्मा ने देख स्वप्न हर्षा उसका॥

तीर्थंकर की माता का पद पाई पद्मा रानी।
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
गर्भकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥१॥

सिंह वृषभ गज लक्ष्मी माला शशि रवि मत्स्य सरोवर,
कलश वारिधि सिंहासन औ भवन विमान मनोहर।
रत्नराशि अग्नि भी देखी जब माता थी जागी,
निन्यानव दिक्कुमारियों संग घिरी हुई सौभागी॥
नूपुर झनकारों से पूरित राजसमीप सुहानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
गर्भकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥२॥

उत्तम आसन बैठ निकट नृप रानी पूछन लागी,
स्वप्नों का फल स्वामिन् क्या हो क्या मैं हूँ बड़भागी।
प्रिये! सुनो हम तीर्थंकर के मात-पिता अब होंगे,
सहस्रार स्वर्गी सुर चयकर मात गर्भ सुख भोगे॥
साढे आठ दिनाधिक मासा नौ निवास तहाँ ज्ञानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
गर्भकल्याणक के वर्णन की पूरी हुई कहानी॥३॥

(दोहा)

श्रावण कृष्णा दोज को, प्रभु का गर्भ महान।
देवों ने उत्सव किया, धार रहे त्रय ज्ञान॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भकल्याणकपूजिताय श्री-मुनिसुव्रतजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

माघ कृष्ण द्वादश शुभ तिथि में था नक्षत्र श्रवण जब,
बिन श्रम मन नयनानन्दित जिन जन्मे थे नृप गृह तब।
खानभूमि ज्यों नीलमणि से होती सहज सुशोभित,
नीलकण्ठ आभायुत शिशु से त्यों पद्मा थी शोभित॥
जन्मसमय के शुभलक्षण युत शिशु काया सब जानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
जन्मकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥५॥

मुकुट और आसन इन्द्रों के कम्पित स्वयं हुए थे,
अवधिज्ञान से देव जन्म की बात विचार किए थे।
घंटा सिंह पटह शंखों की ध्वनि से निश्चय जाना,
जन्मोत्सव के लिए सभी सुर मिलकर हुए रवाना॥
दे कुशाग्रपुर की प्रदक्षिणा शिशु दर्शन की ठानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
जन्मकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥६॥

मात-पिता अरु शिशु को नमकर, जातकर्म कर शिशु को,
ऐरावत हाथी पर बैठा, ले गए मेरु शिखर को।
पाण्डुक शिला उपरि बैठाकर किया न्हवन था जिनका,
क्षीरोदधि के उत्तम जल से हर्षित तीन भुवन था॥
मुनिसुव्रत शुभनाम रखा फिर नृप गृह पुनः रवानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
जन्मकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥७॥

माता की शुभ गोद रखा शिशु सुर ने नाटक थापा,
आनन्दित कर नमन थुतीकर सुर समाज लौटा था।

सुरसेवित त्रय ज्ञान धरे थे अरु कुबेर अनुगामी,
जो विशाल नेत्रों से युत वे सुरसंग क्रीडा स्वामी॥
ज्यों ज्यों तन की वृद्धि हुई त्यों बढ़ी गुणों की खानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
जन्मकल्याणक के वर्णन की पूरी हुई कहानी॥८॥

(दोहा)

वैशाखी कृष्णा दहा, जन्मे श्री भगवान।
पद्मा राय सुमित्र से, सहस गुणों की खान॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मकल्याणकपूजिताय श्री-मुनिसुव्रतजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

कुलाचलों की नदियाँ जैसे सदा एक सी बहतीं,
वरण उन्हीं कन्याओं से त्यों तीनों वय सम रहतीं।
हरिवंशी सूरज ने हितकर प्रजा कमलिनी पोषी,
राजसिंहासन पर शोभित हो बने विषय सुख भोगी॥
राजहंस जिन के संग लीला राजहंसिनी रानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
तपकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥१०॥

शशिसम श्वेत मेघ इक देखा शरद ऋतु में जिनने,
भ्रमणशील ऐरावत गजसम जो दिखता था नभ में।
क्षण में वायु वेग से सहसा हो विलीन जब देखा,
सोचा मुझको ही समझाने आया था नव मेघा॥
भोगों की तृष्णा ईंधन सी उसे बुझाते ज्ञानी,

मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
तपकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥११॥

सारहीन इन्द्रिय विषयों का सुख तज मोक्ष वरूँगा,
अपना हित करने को पहले शिवमग स्वयं चलूँगा।
सिद्ध करूँ जब निज आतम को परहित बाद करूँगा,
तीर्थप्रवर्तन करके जग में जग से भिन्न रहूँगा॥
त्रिज्ञानी भगवान स्वयंभू हो गए आतम-ज्ञानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
तपकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥१२॥

अमरेन्द्रों के आसन सब ही कम्पित हुए स्वयं ही,
संस्तुति करने आ पहुँचे तब लौकान्तिक सुर सब ही।
हे जिन चन्द्र! आप जयवन्तो वृद्धि समृद्धि होवे,
भव्य जीव के उत्तमबन्धो! तीर्थप्रवर्तक होवे॥
चार निकायी देवों की फिर हुई शीघ्र अगवानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
तपकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥१३॥

तब दीक्षा अभिषेक हुआ औ आभूषण से सज्जा,
सुत सुव्रत को राजसिंहासन दिया नहीं की लज्जा।
स्वयं पालकी पर जा बैठे जो विचित्र सुन्दर थी,
भूमि पे भूपतियों ने ली नभ में सुर ने ली थी॥
कार्तिक शुक्ल सप्तमी दीक्षा बेला से प्रभु ठानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।

तपकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥१४॥

शिर के केश उखाड़े प्रभु ने, केश पिटारे लीने,
क्षीरजलधि में क्षेपण कीने सहस राज तप भीने।
जा कुशाग्रपुर में यतिवर ने प्रथम पारणा कीनी,
वृषभदत्त दानी श्रावक ने खीर प्रभू को दीनी॥
पंचाश्चर्य किए देवों ने गए स्वर्ग सुर मानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
तपकल्याणक के वर्णन की पूरी हुई कहानी॥१५॥

(दोहा)

वैशाखी कृष्णा दहा, ऋक्ष श्रवण अपराह्न।
तीन दिवस उपवास से, गृह से किया प्रयाण॥१६॥

ॐ ह्रीं अर्हं तपःकल्याणकपूजिताय श्री-मुनिसुव्रतजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

तेरह मास बिताकर मुनि ने ध्यान अनल विधि बारी,
मगशिर शुक्ल पंचमी तिथि को ज्ञान ज्योति चितिधारी।
पर अपेक्ष बिन युगपत् जग के सब पदार्थ लख लीने,
निरावरण ज्यों सूर्य उदय में सब कुछ दिखे नवीने॥
जीत स्वयं में हासिल करके बन गए केवलज्ञानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
ज्ञानकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥१७॥

चम्पक चैत्य वृक्ष प्रकटा था अठ प्रतिहारी वैभव,
अद्भुत अर्हत्पद की पूजा सुरों नृपों ने की तब।
बारहगण के मध्य बैठकर गणधर विशाख पूछे,

धर्मतीर्थ प्रकटा तब जग में सुना धर्म प्रभु मुख से॥
चौथे कल्याणक की पूजा से हर्षित थे प्राणी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
ज्ञानकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥१८॥

अट्ठाईस गणेशा बैठे तीस हजार श्रमण थे,
पनशत पूर्वज्ञानधारी थे इक्कीस सहस शिक्षक थे।
अठरह सौ अवधिज्ञानी थे इतने केवलज्ञानी,
बाईस सौ विक्रिय ऋद्धिक थे पन्द्रह सौ विपुलज्ञानी॥
बारह सौ वादी यूं सब मिल, सप्त संघ विज्ञानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
ज्ञानकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥१९॥

सहस पचास आर्यिकायें भी एक लाख व्रति श्रावक,
तथा श्राविकायें त्रयलक्ष उडुगण ज्यों शशि परिवृत।
तीस हजार वर्ष की आयु पन्द्रह सहस सुराजा,
साढ़े सात सहस कौमार्य उतना ही मुनिराजा॥
केवलज्ञानी ने विहार में दी थी तत्त्व सुवाणी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
ज्ञानकल्याणक के वर्णन की पूरी हुई कहानी॥२०॥

(दोहा)

वैशाखी कृष्णा नवी, समय रहा पूर्वाण्ह।
शुक्लध्यान बल से जगा, प्रभु में केवलज्ञान॥२१॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानकल्याणकपूजिताय श्री-मुनिसुव्रतजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

वनखण्ड़ों से रहा सुशोभित सम्मेदाचल पर्वत,
अन्त समय में एक मास तक योगनिरोध किए तब।
बन्ध रहित हो बन्ध नाशकर एक हजार मुनीश्वर,
मुनिसुव्रत संग मोक्ष गये थे पद्मासन में यतिवर॥
माघ सुदी तेरस को पाए सिद्धों की रजधानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
मोक्षकल्याणक के वर्णन की आओ सुनें कहानी॥२२॥

अपराह्निक में पुष्प ऋक्ष में इन्द्रों ने की पूजा,
निर्वाणक कल्याणक पूजा से न मिले भव दूजा।
धर्मतीर्थ छह लाख वर्ष तक मुनि प्रभाव से पूरित,
देवागमन निरन्तर रहता जिससे जनमन हर्षित॥
जिनके युग में सब विद्यायें सब थे अर्हं ध्यानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
मोक्षकल्याणक के वर्णन की पूरी हुई कहानी॥२३॥

(दोहा)

फाल्गुन कृष्णा द्वादशी, मोक्ष गये भगवान।
मुनिसुव्रत प्रभु चेतना, सिद्ध अनन्त समान॥२४॥

ॐ ह्री अर्हं मोक्षकल्याणकपूजिताय श्री-मुनिसुव्रतजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

सुव्रत तीर्थंकर का इस विधि जो भवि करता चिन्तन,
पनकल्याणक का यह वैभव पढ़ता सुनता प्रतिदिन।
शीर्घ उसे तो मोक्षलाभ हो विघ्न नष्ट हों सारे,
बोधि समाधि देने वाले धीर वीर जिन प्यारे॥

छन्द पुष्प की माला से यह थुति 'प्रणम्य' वरदानी,
मुनिसुव्रत जिनराज की महिमा सुनो सुनो जग प्राणी।
पनकल्याणक के वर्णन की पूरी हुई कहानी॥२८॥

ॐ ह्रीं अर्हं पञ्चकल्याणकपूजिताय श्री-मुनिसुव्रतजिनाय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

विधान के अर्घ

प्रथम वलय

आत्म वस्तु की शक्तियाँ, प्रकट प्रभू में नन्त।
प्रथम कही जीवत्व है, जीवे कालअनन्त॥१॥

ॐ ह्रीं जीवत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जीव नहीं जड़ रूप हो, चेतन रूप सदैव।
चिति शक्ति प्रकटित भयी, जिनमें वह ही देव॥२॥

ॐ ह्रीं चितिशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस शक्ति के कारणे, सर्व ज्ञेय सामान्य।
युगपत् श्री जिन देखते, दृशि शक्ति वह मान्य॥३॥

ॐ ह्रीं दृशि शक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिस शक्ति के कारणे, ज्ञेय विशेष सुधर्म।
युगपत् श्रीजिन जानते, ज्ञानशक्ति का मर्म॥४॥

ॐ ह्रीं ज्ञानशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आकुलता से शून्य जो, परमानन्द स्वभाव।
नित्य अनाकुल लक्षणा, सुखशक्ति सद् भाव॥५॥

ॐ ह्रीं सुखशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

है सामर्थ्य निजात्म की, रचना सहज स्वरूप।
ज्यों की त्यों गुण धारती, वीर्य शक्ति है भूप॥६॥

ॐ ह्रीं वीर्यशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो स्वतन्त्र राजा महा, एक छत्र निज राज्य।
वह प्रभुत्व शक्ति प्रभो, आप राज साम्राज्य॥७॥

ॐ ह्रीं प्रभुत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी पदार्थों में रहे, व्यापक भाव स्वरूप।
वह विभुत्व शक्ति महा, तव चेतन प्रारूप॥८॥

ॐ ह्रीं विभुत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(प्रथम वलय का अर्घ)

हरिवंशे मुनिसुव्रतनाथा, जिन चरणो में नित नत माथा।
जो तव मुख दर्शन पा जाता, हरे असाता नित हो साता॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनन्त-शक्ति-समन्विताय प्रथमवलये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

द्वितीय वलय

सर्वभाव निज शक्ति से, नित्य देखते आप।
सर्वदर्शि उस शक्ति का, भव्य करें निज जाप॥९॥

ॐ ह्रीं सर्वदर्शित्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सह विशेष सब भाव को, नित्य जानते आप।
सर्व ज्ञत्व उस शक्ति का, भव्य करें निज जाप॥१०॥

ॐ ह्रीं सर्वज्ञत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

झलकें लोकालोक सब, चित् प्रदेश नीरूप।
वह शक्ति स्वच्छत्व है, नानाकृति प्रारूप॥११॥

ॐ ह्रीं स्वच्छत्व-शक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वसंवेदन विशद हो, स्वयं प्रकाशित आत्म।
वह प्रकाश शक्ति महा, अनुभवते परमात्म॥१२॥

ॐ ह्रीं प्रकाश-शक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्षेत्रकाल बन्धन रहित, चिद् विलास उल्लास।
शक्ति आत्म प्रकटित भई, बिन संकोच विकास॥१३॥

ॐ ह्रीं असंकुचितविकाशत्व शक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नहीं अन्य का कार्य है, नहीं अन्य का हेतु।
अकार्यकारण शक्ति है, वस्तु स्वभाव सुसेतु॥१४॥

ॐ ह्रीं अकार्यकारणत्व-शक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर ज्ञेयों को जानता, निज को भी जनवाय।
पर परिणामक शक्ति सह, निज परिणम्य सुहाय॥१५॥

ॐ ह्रीं परिणम्यपरिणामकत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पर ग्राहण कर ना बढ़े, अन ग्रहणे ना न्यून।
शक्तिमहा निज आत्म की, त्याग ग्रहण से शून॥१६॥

ॐ ह्रीं त्यागोपादानशून्यत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

बनी प्रतिष्ठा वस्तु की, षड्गुण वृद्धि हानि।
अगुरुलघू की शक्ति से, गुण विशेष की खानि॥१७॥

ॐ ह्रीं अगुरुलघुत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

क्रमवर्ती वर्ते सदा, अक्रमवर्ति तथापि।
विगम उपज ध्रुव युक्त हो, ना अन्यथा कदापि॥१८॥

ॐ ह्रीं उत्पाद-व्यय-ध्रुवत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विगम उपज ध्रुव कारणें, नित समान असमान।
एकरुप अस्तित्व हो, शक्ति नाम परिणाम॥१९॥

ॐ ह्रीं परिणामशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कर्मबन्ध के नाश से, व्यक्त सहज जो भाव।
फासादिक से शून्य वह, प्रकट अमूर्त स्वभाव॥२०॥

ॐ ह्रीं अमूर्तत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञातापन को छोड़कर, अन्य कर्मकृत भाव।
दूर हुए उनसे प्रभो, शक्ति अकर्ता पाव॥२१॥

ॐ ह्रीं अकर्तृत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञातापन को छोड़कर, अन्य कर्म कृत भाव।
अनुभव से प्रभु दूर हैं, शक्ति अभोक्ता पाव॥२२॥

ॐ ह्रीं अभोक्तृत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सकल कर्म से शून्य हो, आत्मदेश निष्पन्द।
निष्क्रियत्व की शक्ति से, प्रभु में परमानन्द॥२३॥

ॐ ह्रीं निष्क्रियत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सिद्धदशा में नित्य ही, असंख्यात परदेश।
नियत प्रदेशी शक्ति से, आत्म ऊन तन लेश॥२४॥

ॐ ह्रीं नियतप्रदेशत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(द्वितीय वलय का अर्घं)

राम हनू जिन तीरथ जन्मे, भव्य अनेकों हुए अजन्मे ।
ऐसे मुनिसुव्रत प्रभु ध्यायूँ, नित पद कमलन शीश नमाऊं॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनन्त-शक्ति-समन्विताय द्वितीयवलये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तृतीय वलय

तन अनन्त धारे तदपि, व्यापक सबमें एक।
वह स्वधर्म व्यापक कही, शक्ति अनोखी एक॥२५॥

ॐ ह्रीं स्वधर्मव्यापकत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निजपर में सामान्य हैं, वा असमान द्वयी।
कही समानेतर द्वयी, शक्ति निजात्म मयी॥२६॥

ॐ ह्रीं साधारण - असाधारण - साधारणासाधरणधर्मत्वशक्ति- धारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म अनन्ते धारती, एक अनोखी शक्ति।
वह अनन्तधर्मत्व है,नाना गुण अभिव्यक्ति॥२७॥

ॐ ह्रीं अनन्तधर्मत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

युगपत धर्म विरुद्ध भी, रहते चित में आप।
है विरुद्ध धर्मत्व की, शक्ति सदा निष्पाप॥२८॥

ॐ ह्रीं विरूद्धधर्मत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भावात्मक जो शक्ति है, वह होती तद्रूप।
तत्व शक्ति इसको कहा, जो विधेय गुण रूप॥२९॥

ॐ ह्रीं तत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो अभावगत शक्ति है, अतद्रूप वह होय।
वह अतत्त्वशक्ति कही, पर निषेध गुण जोय॥३०॥

ॐ ह्रीं अतत्त्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक द्रव्यमय होय के, पर्यायों में जाय।
एकपना ना छोड़ता, शक्त्यैकत्व कहाय॥३१॥

ॐ ह्रीं एकत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

एक द्रव्य व्यापी बहू, पर्यायों की जान।
अनेकत्व शक्ति महा, प्रकट आप कहलात॥३२॥

ॐ ह्रीं अनेकत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो है उस ही रुप है, भाव शक्ति का नाम।
आप अनुभवें आप को, अनुभव दूजा नाम॥३३॥

ॐ ह्रीं भावशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शून्य अवस्था रुप जो, शक्ति अभावी जान।
पर को पर ही अनुभवें, इससे ही हो भान॥३४॥

ॐ ह्रीं अभावशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो होती पर्याय है, वह व्यय रुप भी होय।
भावाभावी शक्ति से, उभय रुप यह होय॥३५॥

ॐ ह्रीं भावाभावशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो होती पर्याय ना, उदय रुप वह होय।
अभावभावी शक्ति से, उभय रुप यह होय॥३६॥

ॐ ह्रीं अभावभावशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो होती पर्याय है, वह ही होने रूप।
भावभावशक्ति बड़ी, जिनवर देखें रूप॥३७॥

ॐ ह्रीं भावभावशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो होती पर्याय ना, वह ना होने रूप।
अभावभावशक्ति महा, अद्भुत वस्तु स्वरूप॥३८॥

ॐ ह्रीं अभावाभावशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कारक के अनुसार जो, होते थे परिणाम।
उनसे प्रभु निष्क्रान्त हैं, भाव शक्ति का धाम॥३९॥

ॐ ह्रीं भावशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

कारक के अनुसार जो, होता है परिणाम।
उससे भी प्रभु परिणमें, क्रियाशक्ति का काम॥४०॥

ॐ ह्रीं क्रियाशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

प्राप्त रूप जो हो रहा, सिद्ध रूपमय भाव।
कर्मशक्ति उसको कहा, होता प्राप्त स्वभाव॥४१॥

ॐ ह्रीं कर्मशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

होना ही बस मात्र है, सिद्ध रूप में भाव।
उसी भाव को कर रहे,कर्ता शक्ति स्वभाव॥४२॥

ॐ ह्रीं कर्तृत्वशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्तमान के भाव के, होने में जो हेतु।
करण शक्ति महती रही, निज स्वभाव में सेतु॥४३॥

ॐ ह्रीं करणशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अपने द्वारा आप में, दिया जा रहा भाव।
सम्प्रदान की शक्ति से,प्राप्त कर रहा भाव॥४४॥

ॐ ह्रीं सम्प्रदानशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

विगम उदय के नाश से, भाव हानि ना होय।
अपादान की शक्ति से, ध्रौव्यभाव मय होय॥४५॥

ॐ ह्रीं अपादानशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जो भी होता भाव है, वह निज के आधार।
अधिकरणा की शक्ति से, आप स्वयं साभार॥४६॥

ॐ ह्रीं अधिकरणशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निज में निज का भाव ही, स्वामी है स्वयमेव।
संबंधी शक्ति महा, शोभित है निज देव॥४७॥

ॐ ह्रीं सम्बन्धशक्तिधारकाय श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

वर्षा की बूंदें प्रभो, क्या कोई गिन पाय।
तवगुण गण की नन्तता, क्या कोई समझाय॥४८॥

ॐ ह्रीं अनन्तगुणशक्तिधारकाय श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(तृतीय वलय का अर्घ)

आत्मवस्तु या अन्य वस्तु हो, अनेकान्तमय आप लखें।
जो भविजन तव वाणी सुनते, अनेकान्तमय दृष्टि रखें।
वस्तु रीति ही जिननीति है, नहीं आप कुछ अन्य कहें।
जैसा है वैसा प्रभु देखें, वही कहें निज मगन रहें।

ॐ ह्री श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनेकान्त-रीतिप्रकाशकाय तृतीय- वलये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

मुनियों के व्रत जान आपने, मुनिव्रत पाप रहित पाले।
मुनिसुव्रत यह नाम आपका, सार्थक नाम सभी गाले॥
समवसरण में सभा लगी जब, मुनियों में अद्भुत शोभा।
नील वर्ण की देह आपकी, नहीं कहीं ऐसी शोभा॥
नील देह में श्वेत रक्त की, महिमा कौन बखान करे।
गुणरत्नाकर के गुण गा ले, किसकी ऐसी शान अरे॥
लक्षण अष्ट सहस्र धारती, देह आपकी निर्मल है।
गुण अनन्त आतम में विलसें, मोह रहित चित् बिन मल है॥
चार घातिया कर्म नष्ट कर, शक्ति ज्ञान सुख प्राप्त किए।
आत्म गुणों की नन्त शक्तियाँ, नन्त रूप में धार लिए॥
तत्त्वों का उपदेश दिया अरु, भव्यों का कल्याण किया।
बिनास्वार्थउपकारकियाफिर,सिद्धवधूकावरणकिया॥
जो भविजन तव पूजन करता, दर्शन करता भावों से।
सब अनिष्ट उसके टल जाते, बचता पाप विकारों से॥
मिथ्या पथ पर भटक रहे जो, उनको मार्ग बताया है।

मुझको सम्यक् पथ दिखलाओ, मन में यही समाया है॥

ॐ ह्रीं श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्य पद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्य निर्वपामीति स्वाहा।

मुनिसुव्रत जिनदेव की, महिमा अपरम्पार।
मैं 'प्रणम्य' जिनपद नमूं, वन्दूं बारम्बार॥
कृष्णाषाढी पंचमी, शुभ दिन मंगलवार।
लिखा लालमंदिर जहाँ, पार्श्वप्रभू आधार॥
वीर गये निर्वाण की, पच्चीस सौ चवालीस।
दिल्ली में ही मिल रहा, मुझको गुरु आशीष॥

इति आशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्

आचार्य श्री जिनसेनविरचित-
श्री मुनिसुव्रतनाथ-जिनस्तोत्रम्

(वसन्ततिलकावृत्तम्)

श्रीशीतलादिह परेषु जिनेषु पश्चात्
तीर्थं प्रवर्त्य भरते जगतां हितार्थम्।
कालक्रमेण नवसु श्रितवत्सु मोक्षं
स्वर्गादिहैष्यति जिनाधिपतौ च विंशे॥१॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीविंशजिनाधिपति स्वर्गावताराय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

शक्राज्ञया प्रतिदिनं वसुधारयोच्चै-
रापूरयत्यवनिपस्य गृहं कुबेरः।
पद्मावती मृदुतले शयने शयाना
स्वप्नान् ददर्श दश षट् च निशावसाने॥२॥

ॐ ह्रीं अर्हं लक्ष्मीमालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

नागोक्ष-सिंह-कमला-कुसुम-स्त्रगिन्दु-
बालार्क-मत्स्य-कलशाब्ज-सरोऽम्बुराशीन्।
सिंहासनामरविमान - फणीन्द्रगेह
सद्रत्नराशि-शिखिनो जिनसूरपश्यत्॥३॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभस्वप्नमालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

सोपासिता नवनवत्युपमाव्यतीत-
दिव्यप्रभाव - दिगभिख्य - कुमारिकाभिः।
शय्यातले सकुसुमे शुशुभे विबुद्धा
लेखा यथा नभसि तारकिता हिमांशोः॥४॥

ॐ ह्रीं अर्हं दिक्कुमारिमालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

चित्राम्बराम्बु - रमनाग्रणिता - तिमञ्जु-
मञ्जीर - सिञ्जित - विहङ्ग - निनादरम्या।
मीनेक्षणा त्रिवलिभङ्ग - तरङ्गिणी सा
स्त्रीवाहिनी समगमद् वरवाहिनीशम्॥५॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वामिसमीपजननीगमनकराय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

आसीनयाऽऽसनवरे स तया समीपे
स्वप्नावलीफल-मिलाधिपतिः प्रपृष्टः।
तस्यै जगौ जिनपतेर्जगतां त्रयस्य
भर्तुर्गुरू लघु भवाव इति प्रहृष्टः॥६॥

ॐ ह्रीं अर्हं स्वप्नावलीफलविज्ञानकराय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

आरात्सहस्र - पदपूर्व - पदादुदारा-
दारान्नमत्सुर - सहस्रगणोऽवतीर्य।
मासानुवास नव गर्भगृहे प्रशुद्धे
सार्धाष्टमाहगणनान् मुनिसुव्रतोऽस्याः॥७॥

ॐ ह्रीं अर्हं गर्भकल्याणकपूजिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

सासूत सूतिसमयेन्द्रमहे च माघ-
पक्षेऽसिते जनमनो - नयनोत्सवं तम्।
द्वादश्यभीप्सिततिथौ श्रवणेऽश्रमेण
स्त्रीद्यौरनघ्ररहिता जिनपूर्णचन्द्रम्॥८॥

ॐ ह्रीं अर्हं जनमनोनयनोत्सवाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

जातेन तेन शुभलक्षणचर्चितेन
पद्मावती प्रमुदिता मुनिसुव्रतेन।
सा रुढरागशिखि - कण्ठरुचा चकासे
स्निग्धेन्द्र - नीलमणि - नाकर - भूरिवैका॥९॥

ॐ ह्रीं अर्हं शुभलक्षणचर्चितपुत्रमालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

आकम्पितासन - तिरीट - जगत्त्रयेन्द्राः
सद्यः प्रयुक्तविशदावधयोऽधिगम्य।
चेलुः सुरा जिनसमुद्भव - मद्भुतोच्चै-
र्घण्टामृगेट् पटहशङ्ख - रवैश्च शेषाः॥१०॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनसमुद्भवसंकेतकराय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

गन्धाम्बुवर्ष - मृदुमारुत - पुष्पवृष्टि-
संपूरिता-खिलजगद्वलयाः समन्तात्।
आगत्य चाशु सुकृतोज्ज्वल - भूषवेषाः
शक्रादयः पुरुकुशाग्रपुरं परीयुः॥११॥

ॐ ह्रीं अर्हं अखिलजगत्सौख्यकराय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

नत्वा जिनं जिनगुरु च सुरासुराश्च
तज्जातकर्मणि कृते सुरकन्यकाभिः।
ऐरावतं तमधिरोप्य महाविभूत्या
गत्वा परीत्य गिरिराज - मधित्यकायाम्॥१२॥

ॐ ह्रीं अर्हं ऐरावतगजस्थिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

संस्थाप्य पाण्डुकशिलातलमस्तके तं
सिंहासने सुपयसोद्धपयः पयोधेः।
भूत्वाभिषिच्य कृतभूष - मभिष्टवैस्ते
स्तुत्वाऽभिधाय मुनिसुव्रत - नामधेयम्॥१३॥

ॐ ह्रीं अर्हं पाण्डुकशिलोपरिस्नपनयोग्याय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

आनीय नीतिकुशलाः जननीशुभाङ्क-
मारोप्य नाटकविधिं प्रविधाय देवाः।
नत्वा ययुः शतमखप्रमुखा यथास्व-
मानन्दितत्रिभुवनं सगुरुं जिनं ते॥१४॥

ॐ ह्रीं अर्हं त्रिभुवनयशोमालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

ज्ञानत्रयं सहजनेत्रमुदारनेत्रो
बिभ्रज्जिनः सुरकुमारकसेव्यमानः।
कालानुरूपकृत - सर्वकुबेरयोग-
क्षेमो ययावपघनस्य गुणस्य वृद्धिम्॥१५॥

ॐ ह्रीं अर्हं जन्मकल्याणकपूजिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

रम्याङ्गनाश्च कुलशैल - समुद्भवास्त-
माद्यन्तमध्य-सतताभ्युदया युवानम्।
लावण्यवाहिनमवाप्य विवाहपूर्वं
नद्यः समुद्रमिव संवरयांबभूवुः॥१६॥

ॐ ह्रीं अर्हं युवराजाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

राज्यस्थितः स हरिवंशमरीचिमाली
राजा प्रजाकमलिनी - हितलोकपालः।

राजाधिराज - सुरसेवित - पादपद्मो
भेजे चिरं विषयसौख्यमखण्डिताज्ञः ॥१७॥

ॐ ह्रीं अर्हं राजाधिराजसुरसेवितचरणकमलाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

काले स तत्र मुनिसुव्रत - राजहंसः
कैलासशैलसदृशे स्थितवान् सुसौधे।
लीलावधूत - रतिविभ्रम - राजहंसीः
व्रीडामयाति - रुचिराभरणाः प्रपश्यन् ॥१८॥

ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येकबुद्धबोधिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

पश्यन् दिशः सकलशारदसस्यशोभाः
मेघं ददर्श शशिशुभ्र - मदभ्रशोभम्।
व्योमार्णवारमण - तृष्णमिवावतीर्ण-
मैरावणं भ्रमणविभ्रम - वारणेन्द्रम् ॥१९॥

ॐ ह्रीं अर्हं राजहंसाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

पश्चात्प्रचण्डतर - मारुत - वेगघात-
निर्मूलितावयवमाशु विलीयमानम्।
ज्वालोपनीतमिव तं नवनीतपिण्ड-
मालोक्य लोकविभुरित्थमचिन्तयत्सः ॥२०॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैराग्यनिमित्तदर्शकाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

शीर्णः शरज्जलधरः कथमेष शीघ्र-
मायुः शरीरवपुषां विशरारुतायाः।
लोकस्य विस्मरणशील - विशीर्णबुद्धे-
राशूपदेशमिव विश्वगतं वितन्वन् ॥२१॥

ॐ ह्रीं अर्हं वैराग्यमालाभाविताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

भोगाभिलाष - विषमाग्नि - शिखाकलाप-
संवृद्धये हि विषयेन्धनराशिरुच्चैः।
तस्यैव तु प्रशमहेतुरिहैव तस्माद्
व्यावृत्तिरिन्द्रियजिति स्थिरवारिधारा॥२२॥

ॐ ह्रीं अर्हं भोगस्वरूपविचारकाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

हित्वा ततो विषयसौख्यमसारभूतं
शीघ्रं यतेऽहमिह मोक्षपथे सनाथे।
स्वार्थं प्रसाध्य परमं प्रथमं परार्थं
तीर्थप्रवर्त्तनमथ प्रथयामि तथ्यम्॥२३॥

ॐ ह्रीं अर्हं तीर्थप्रवर्तकभावाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

लौकान्तिका ललितकुण्डलहारशोभाः
सारस्वतप्रभृतयो निभृताः सिताभाः।
आगत्य मौलिमिलिताञ्जलयः किरन्तः
पुष्पाञ्जलीनिति जिनं नुनुवुर्नमन्तः॥२४॥

ॐ ह्रीं अर्हं लौकान्तिकसुरपूजिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

वर्धस्व नन्द जय जीव जिनेन्द्रचन्द्र!
विज्ञानरश्मिहतमोहतमो वितान।
निर्बन्धुबन्धुतम! भव्यकुमुद्वतीनां
तीर्थस्य विंशतितमस्य हितस्य कर्ता॥२५॥

ॐ ह्रीं अर्हं विंशतितमतीर्थकर्त्रे मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

सौधर्मपूर्व - विबुधाश्च चतुर्णिकाया
नानाविमान - निवहस्थगितान्तरिक्षाः।
संप्राप्य नाथमभिषिच्य सुगन्धितोयै-
स्तं भूषितं विदधुरद्भुतभूषणाद्यैः॥२६॥

ॐ ह्रीं अर्हं राज्याभिषेकमालायोग्याय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

पुत्रं च सुव्रतमसौ मुनिसुव्रतेशः
प्राभावतेय - मभिराज्यपदेऽभ्यषिञ्चत्।
श्वेतातपत्रसित - चामरविष्टराणि
सोऽलञ्चकार हरिवंशनभः शशाङ्कः॥२७॥

ॐ ह्रीं अर्हं अभिराज्यपदमालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

भूपोद्धृतां नभसि देवगणैरुदूढा-
मारूढवान् सुरुचिरां शिविकां विचित्राम्।
यातो वनं विदितकार्त्तिक - शुक्लपक्षे
षष्ठोपवासकृदुपाश्रित - सप्तमीकः॥२८॥

ॐ ह्रीं अर्हं जिनदीक्षामालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

भूभृत्सहस्रपरिवारभृदेष बभ्रे
दीक्षां समक्षमखिलस्य जगत्त्रयस्य।
तन्मूर्धजानधिनिधाय निजोत्तमाङ्गे
शक्रश्चकार विधिना सुपयः पयोधौ॥२९॥

ॐ ह्रीं अर्हं शक्रकरजिनकेशप्रक्षिप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

कृत्वामराश्च जिननिष्क्रमणं तृतीय-
कल्याणपूजनममी जगुरीश्वरोऽपि।
ज्ञानैश्चतुर्भिरनुगैश्च सहस्रसंख्यै-
स्तैः पार्थिवैर्दिनमणिः किरणैरिवाभात्॥३०॥

ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्विधज्ञानमालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

षष्ठोपवासिनि परेद्युरिनेऽवतीर्णे
भिक्षाविधिप्रकटनाय कुशाग्रपुर्याम्।
भिक्षां ददौ वृषभदत्त इति प्रसिद्धः
सत्पायसं सविधिना मुनिसुव्रताय॥३१॥

ॐ ह्रीं अर्हं भिक्षाविधिप्रकटनाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

नेदुस्ततस्त्रिदश - दुन्दुभयो निनादाः
साधुस्वनः सकल - मम्बर - माततान।
वायुर्ववौ सुरभि - रद्भुतपुष्पवृष्टि-
र्व्योम्नः पपात महती वसुनश्च धारा॥३२॥

ॐ ह्रीं अर्हं पञ्चाश्चर्यमालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

आश्चर्यपञ्चकमिदं चिर - मम्बरस्था
देवा विकृत्य परमं परदुर्लभं ते।
संपूज्य दानपति - मर्जित - पुण्यपुञ्जं
जग्मुर्जिनोऽपि विजहार विहारयोग्यम्॥३३॥

ॐ ह्रीं अर्हं तपःकल्याणकपूजिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

छद्मस्थकालमतिवाह्य समासवर्षं
संमार्गशीर्षसुतिथिं सितपञ्चमीं तु।
ध्यानाग्निदग्ध - घनघाति - समित्समृद्धिः
कैवल्यलाभविभवेन चकार पूताम्॥३४॥

ॐ ह्रीं अर्हं उत्कृष्टलाभमालाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

साक्षाच्चकार युगपत्सकलं स मेय-
मेकेन केवलविशुद्ध - विलोचनेन।
नाथस्तदा न हि निरावरणो विवस्वा-
नभ्युद्गतः क्रमसहायपरः प्रकाश्ये॥३५॥

ॐ ह्रीं अर्हं केवलविशुद्धलोचनाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

भक्त्याऽर्चयन् त्रिभुवनेश्वर - मानवेन्द्रा-
स्तं देवमभ्युदितचम्पक - चैत्यवृक्षम्।
सत्प्रातिहार्य - विभवा ति - विशेषरूप-
मार्हन्त्य - मद्भुत - मचिन्त्य - मनन्तमेतम्॥३६॥

ॐ ह्रीं अर्हं अष्टप्रातिहार्यमालासहिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

स द्वादशस्वथ गणेषु निषण्णवत्सु
स द्वादशाङ्ग - मनुयोगपथं जिनेन्द्रः।
धर्मं विशाखगणिना विनयेन पृष्टः
संभाष्य तीर्थमवनौ प्रकटं प्रचक्रे॥३७॥

ॐ ह्रीं अर्हं विशाखगणधरसेविताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

कल्याणपूजनमिनस्य तुरीयमिन्द्राः
कृत्वा यथायथमगुः प्रणिपातपूर्वम्।
देशान् जिनोऽपि विजहार बहून् बहूनां
धर्मामृतं तनुभृतां घनवत्प्रवर्षन्॥३८॥

ॐ ह्रीं अर्हं धर्मतीर्थप्रवर्तकाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

अष्टौ च विंशतिरिनस्य जिनेन्द्रचर्याः
क्रोडीकृताखिल - चतुर्दशपूर्वशास्त्राः।
त्रिंशत्सहस्रगणना परिषद् यतीनां
नानागुणैरजनि सप्तविधः स संघः॥३९॥

ॐ ह्रीं अर्हं सप्तविधमुनिसंघमालाधराय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

स्युस्तत्र पञ्चशतपूर्वधरा यतीशा
एकादिविंशति - सहस्रभिदाश्च शिक्षाः।
अष्टादशैव गदितानि शतानि तेषु
प्रत्येकमस्य मुनयोऽवधिकेवलाप्ताः॥४०॥

ॐ ह्रीं अर्हं अवधिकेवलज्ञानादिमुनिसहिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

द्वाविंशतिर्यतिशतानि तु वैक्रियाख्या-
स्तान्येव पञ्चदश ते विपुलास्तु मत्या।
स्युर्द्वादशैव हि शतानि विवान्तवैराः
सद्वादिनो मुनिपतेः प्रथिताः सभायाम्॥४१॥

ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमत्यादिमुनिसहिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

पञ्चाशदात्मकसहस्र - भिदास्तदार्याः
शिक्षागुणव्रतधरा गृहिणोऽपि लक्षाः।

सम्यक्त्वपूतमनसो वनितास्त्रिलक्षाः
सभ्योडुभिः परिवृतश्च बभौ जिनेन्दुः ॥४२॥

ॐ ह्रीं अर्हं द्वादशगणमालाशोभिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

त्रिंशद्गुणप्रथितवर्ष - सहस्रजीवी
प्राक् पञ्चसप्ततिशताब्द - कुमारकालः।
राज्येऽपि पञ्चदशवर्षसहस्रभोगी
सत्संयमेन विजहार स शेषकालम् ॥४३॥

ॐ ह्रीं अर्हं ज्ञानकल्याणकपूजिताय श्री-मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

अन्ते स सम्मदविधायि - वनान्तकान्तं
सम्मेदशैलमधिरुह्य निरस्तबन्धः।
बन्धान्तकृन्मुनि - सहस्रयुतो जगाम
मोक्षं महामुनिपति - र्मुनिसुव्रतेशः ॥४४॥

ॐ ह्रीं अर्हं सम्मेदशैलमोक्षप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

माघत्रयोदशतिथौ सितपक्षभाजि
मासोपसंहृतविहार - विसृष्टदेहे।
स्थित्वाऽपराह्णसमये वरपुष्ययोगे
सिद्धे जिने ननु महं विदधुः सुरेन्द्राः ॥४५॥

ॐ ह्रीं अर्हं सिद्ध-पूजाप्राप्ताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

षड्वर्षलक्षपरिमाणमिनस्य तस्य
प्रावर्त्तत प्रविततं भुवि धर्मतीर्थम्।
विद्यावबोधबुधितार्थ - मुनिप्रभावं
देवागमाविरति - वर्द्धितलोकहर्षम् ॥४६॥

ॐ ह्रीं अर्हं मोक्षकल्याणकपूजिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

विंशस्य तस्य चरितस्य जिनस्य लोके
कल्याणपञ्चकविभूति विभावयन् यः।
भक्त्या शृणोति पठति स्मरतीदमस्मिन्
भव्यो जनो भजति सिद्धिसुखं स शीघ्रम्॥४७॥

ॐ ह्रीं अर्हं भव्यजनसंकल्पसिद्धिमालाप्रदाय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

एवं वसन्ततिलक - प्रचुरप्रसून-
मालामिमां समधिरोप्य विनूतवृत्तः।
विघ्नान् विधूय विदधातु समाधिबोधी
धीरो जिनो जितभवो मुनिसुव्रतो नः॥४८॥

ॐ ह्रीं अर्हं पञ्चकल्याणकपूजिताय मुनिसुव्रतजिनाय वन्दनमालां समर्पयामीति नमः

मुनिसुव्रत जगनाथ जिन, जग बन्धु हितकार।
पूजन का फल बस मिले, चित् 'प्रणम्य' अविकार॥

इति पुष्पांजलिं क्षिपेत्।